

भारतीय योग ग्रन्थों में मोक्ष की अवधारणा।

¹Birbhan, ²Virender Kumar

M.A. Yoga, Assistant Professor, Department of Yoga, CRSU, Jind

सार-लेख

मोक्ष का अर्थ हे बंधन से मुक्ति। जीवन का अन्तिम लक्ष्य ही मोक्ष है। अपने सुख-दुःख, लाभ-हानि आदि सभी अवस्थाओं में हम धीरे-धीरे अपनी मंजिल (मोक्ष) की तरफ बढ़ रहे हैं। मानव के हृदय पटल पर मुक्ति की इच्छा आज कोई नया विषय नहीं; अपितु यह युगो-युगों से जीव के जीवन का अहम हिस्सा है, तथा जब तक वह सृष्टि रहेगी, इसकी प्रमुखता बनी रहेगी। आधुनिक युग में मोक्ष, निर्वाण, कैवल्य, परमपद, मुक्ति आदि के नाम पर अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति हेतु बहकाया जाता है जिसके फलस्वरूप समाज में असमानता अशान्ति व दुराचार बढ़ता है। आज ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो चुकी, जो समाज व राष्ट्र के लिए एक अभिशाप के रूप में उभर कर सामने आई हैं। व्यक्ति का मोक्ष की ओर आकर्षित होना, सहज व सरल है। क्योंकि आत्मा परमात्मा का अंश है, उसका उस ओर बढ़ना स्वाभाविक है। अतः यह ज्ञान (समझ) लेना परम आवश्यक है कि यह मुक्ति क्या है? कहाँ से आई है? कहाँ इसका विलय होगा? जीवात्मा के लिए इसका क्या महत्व है? इस भावना के बिना तुम्हारे सभी कार्य व्यर्थ हैं।

ISSN : 2348-5612 © URR



मुख्य शब्दः— मोक्ष, बंधन, मुक्ति, ब्रह्म, परमात्मा, सत्संग, भक्ति, लक्ष्य, सन्मार्ग, कर्म, ज्ञान, योग, परमपद।

इस संसार में आत्मा (पुरुष) का विषयों, शरीर, इन्द्रियों के साथ जो संबंध है, उसे बंधन कहते हैं। इन तीनलों ने ही आत्मा को इस बंधन में जकड़ रखा है। इस त्रिविध बंधन से छुटकारा पाना मोक्ष है। यह प्रकृति और तीन गुणों के चंगुल से मुक्ति की अवस्था है। इसमें प्रकृति का कर्म क्षेत्र अविद्या से शुक होता है तथा जीवन मुक्ति पर समाप्त हो जाता है जबकि मुक्ति की यह चरम अवस्था हमारे भीतर पहले से विद्यमान है। यह हमें अवश्य जान (समझ) लेना चाहिए कि मोक्ष की अवस्था अविद्या तथा पिछले जन्मों के कम संस्कारों की परतों में छिपी हुई है। प्रकृति और पुरुष का अविद्या के कारण (संयोग)से जो बंधन है उसे विवेक ज्ञान के माध्यम से उस बंधन को काटना या उस संयोग का वियोग करना (संयोग का अभाव) मोक्ष है।

यह संसार जिस परम शक्ति (ब्रह्म) से पैदा हुआ है, उसी की ओर बढ़ने की चेष्टा में लगा रहता है। वो दया का सागर होने के साथ ही इस परम शक्ति ने अनेक देवी-देवताओं को नियमानुसार कार्य सौंप रखे हैं वे सब इनकी आज्ञा का पालन करते हैं। इस प्रब्रह्म को जो तत्त्वज्ञ पुरुष जान लेता है वह जन्म-मरण के चक्र से छुट जाता है, अर्थात् वह मोक्ष, कैवल्य या निर्वाण को प्राप्त होता है।

मोक्ष को उच्च अवस्था कहा गया है। इसे प्राप्त करने वाली आत्माएं सभी में प्रवेश कर सकती हैं। वे रोग, द्वेष, मृत्यु होकर ब्रह्म में समा जाती हैं। यह नित्य आनन्द की अनुभूति है। इस अवस्था को प्राप्त आत्मा सदा के लिए ब्रह्मकालीन हो जाती है, फिर जन्म-मरण के चक्र में नहीं आती।

मुक्ति के चार प्रकार हे—

1. सालोक्य मुक्ति।
2. सामिप्य मुक्ति।
3. सारूप्य मुक्ति।
4. सापुज्य मुक्ति।

सालोक्य मुक्तिः—

इस अवस्था में साधक भगवान विष्णु के लोक में निवास करता है।

सामिप्य मुक्ति

मुक्ति को इस अवस्था में साधक राजा के सहायक की भांति परमात्मा (ईश्वर) के निकट रहता है।

सारूप्य मुक्ति

इसमें साधक राजा के भाई यसा युवराज की तरह ईश्वर के समान रूप रखता है।

सायुज्य मुक्ति

इस अवस्था में साधक ईश्वर से इस प्रकार एक हो जाता है जिस प्रकार चीनी व नमक पानी में। इसे लोग आत्म साक्षात्कार, ईश्वर दर्शन, मोक्ष, निर्वाण, बुद्धत्व, सर्वोच्च से मिलन, समाधि आदि विभिन्न उपाधियों से जानते हैं।

‘धर्मार्थकाममोक्षणामारोग्य मूलभुतमम्’

भारतीय संस्कृति में चतुष्टम पुरुषार्थ का अत्यधिक महत्व बतलाया गया है। धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के जीवन का अनिवार्य अंग माना है। किन्तु आधुनिक जीवन में गृहस्थ जीवन केवल काम व मोक्ष प्रधान रह गया है। धर्म व मोक्ष योगियों के लिए। किन्तु सामाजिक उन्नति, राष्ट्र उत्थान के लिए इन चारों का जीवपन में समन्वय परम आवश्यक है।

शास्त्रों में लिखा है, कि जो तुमने पढ़ा सुना सब सही या किन्तु उसे सुनकर तुमने उचित रास्ता नहीं चुना। निर्वाण के जिस उच्च आदर्श को तुमने अनुभव किया था, वह परम सत्य है, किन्तु उसे बाहरी दुनिया में दूढ़ना, तुम्हारी बहुत बड़ी भूल है, क्योंकि जिसके परम शान्ति, ईश्वर, कैवल्य आदि अनेक नाम हैं उसे प्राप्त करने के लिए बाहर भटकना मूर्खता है, वह जब भी प्राप्त होगा, तुम्हारे अन्दर होगा।

मोक्ष की प्राप्ति के लिए अनेक साधनों का वर्णन मिलता है। मानव अपनी सुविधानुसार किसी एक साधन को अपनाकर उस परमानन्द की प्राप्ति कर सकता है। जिनमें से कुछ का विवरण इस प्रकार है—

1. नैतिक पूर्णता के बिना अध्यात्म में कोई उन्नति संभव नहीं है और अध्यात्मिक उन्नति के बिना मोक्ष नहीं हो सकता। अतः मुक्ति के लिए नैतिक पूर्णता का होना परम आवश्यक है।
2. विवके ज्ञान का अध्यात्म में अत्यधिक महत्व है। विवके ज्ञान से पूर्ण व्यक्ति अपने जीवन से विषयों को अलग करके वह अपने ध्यान को परमात्मा में लगा लेता है, जिससे उसमें आत्म संयम आ जाता है, जिसके कारण वह जगत के बंधन से मुक्त हो जाता है। अतः कैवल्य की प्राप्ति हेतु मानव को विवके ज्ञानी व आत्म संयमी चाहिए।
3. आत्म ज्ञान से मानव वासनाओं, अहंकार, संकल्प आदि का विनाश कर ब्रह्मानन्द को प्राप्त कर लेता है। अतः मानव को आत्म ज्ञानी होना चाहिए। जिससे वह सब विषय—वासनाओं का त्याग कर परमपद की प्राप्ति कर सके।
4. मुक्ति के चार द्वारपाल बताए गए हैं—1 शान्ति, 2 विचार, 3 सन्तोष 4 सत्संग। यदि इनमें से सिकी एक को भी जीवन में पूर्णतः धारण कर लिया जाए, तो बाकि तीन स्वतः ही आ जाएंगे। जिससे मुक्ति प्राप्ति में कोई संशय नहीं रहेगा।
5. भक्ति, ज्ञान, कर्म ऐसी त्रिवेणी है जिसमें श्रद्धा पूर्वक डूबकी लगाने से मोक्ष का मार्ग स्वतः ही खुल जाता है।
6. योग का लक्ष्य व्यक्ति का मोक्ष है। अतः उस परब्रह्म को पाने के लिए योग का जीवन में धारण परम आवश्यक है।
7. ध्यान की साधना से एक—एक करके अज्ञानता के परदे हटते जाते हैं, जिसके माध्यम से साधक आहिस्ता—आहिस्ता अपने लक्ष्य परमपद को प्राप्त कर लेता है।



8. विश्वास से अपूर्व दूरदृष्टि होती है। उस परमसता में पूर्ण विश्वास से भी मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है।
9. उस मोक्ष रूपी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गुरु सबसे महत्वपूर्ण कड़ी माना गया है। उस परमपद की प्राप्ति के लिए मन व बुद्धि को निरर्तिक माना गया है। गुरु के उपेक्ष से ही उसे जाना जा सकता है सद्गुरु द्वारा दिखलाए सन्मार्ग पर चलकर ही उस परमतत्व की प्राप्ति की जा सकती है।
10. मोक्ष की इच्छा रखने वाले साधक के लिए सात गुण जरूरी बतलाए है—
 1. शुद्धिकरण 2. दृढ़ता 3. स्थिरता 4. धैर्य 5 शरीर का हल्कापन 6. प्रत्यक्ष 7. निर्लिप्तता।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मानव का मोक्ष की तरफ आकर्षण सहज व सरल है, किन्तु अज्ञानता के कारण वह अनुचित मार्ग अपना लेता है, जिसके कारण वह अपने पतन के साथ-साथ समजा व राष्ट्र के लिए भी बाधा बन जाता है। आज के मानव को चाहिए वह उक्त साधनों में से किसी एक साधन को अपनाकर अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। जो सम्पूर्ण सृष्टि के लिए कल्याण कारी है।

सन्दर्भ सूची:—

1. स्वामी सत्यानन्द सरस्वती, मुक्ति के चार सोपान, योग पब्लिकेशन ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, द्वितीय संस्करण—2013, ISBN-978-81-85-787-92-3।
2. श्री योगेश्वरानन्द सरस्वती, बहिरंग योग, योग निकेतन ट्रस्ट, नई दिल्ली 9 वॉ संस्करण , , ISBN 81-87 109-03-3।
3. स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती, योग साधना माला-1 योग पब्लिकेशन ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, , ISBN-978-93-81620-58-8।
4. स्वामी विवेकानन्द, ज्ञान योग,—प्रभात पेपर बैक्स, नई दिल्ली। , ISBN 978-93-5048-609-2।
5. योग विज्ञान प्रदीपिका, डॉ0 विजयपाल शास्त्री सत्यम् पब्लिकेशिंग हाऊस, नई दिल्ली। , ISBN-81-88134-57-0, संस्करण—2016।
6. स्वामी शिवानन्द— साधना, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, उत्तराखण्ड। , ISBN 81-7052-153।
7. स्वामी सत्यानन्द सरस्वती—ईश्वर दर्शन, योग पब्लिकेशन ट्रस्ट, मुंगेर बिहार, , ISBN-81-85-787-49-2
8. स्वामी विवेकानन्द, कर्मयोग, रामकृष्ण मठ (प्रकाशन विभाग) नागपुर। , ISBN-978-9-3848832-2-5।
9. ऋरिकृष्णदास गोयन्दका—ईशादि नौ उपनिषद, गीता प्रैस, गोरखपुर।
10. स्वामी रामसुखदास— गीता माधुर्य, गीता प्रैस, गोरखपुर।
11. ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी थो न दूष्टि न काङ्क्षति।
निर्दून्दो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रभुच्यते 11 (श्रीमद्भगवद्गीता)
12. डॉ. एन. के. तिवारी, अनीता तिवारी. भारतीय धर्म एवं दर्शन में योग, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली , ISBN-978-81-7555-382-8।
13. स्वामो चरणदास, भक्ति सागर, तेजकुमार बुक डिपो (प्रा0) लि. लखनऊ
14. स्वामी ओमानन्द तीर्थ, पातंजल योग प्रदीप, गीता प्रैस, गोरखपुर , ISBN-81-293-0011-7
15. डॉ0 तारक नाथ प्रमाणिक, योग साधना— स्पोर्ट्स पब्लिकेशन्स नई दिल्ली , ISBN-978-81-7879-785-4
16. [www. Spiritual world. Com](http://www.Spiritual world. Com) (मोक्ष ज्ञान से संस्कार से नहीं)
17. स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती, घेरण्ड संहिता, योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार , ISBN-978-81-86-336-35-9



18. ष्रमहंस स्वामी अनन्त भारती, सिद्ध सिद्धानत पद्धति, चौखम्ब ओरियन्टालियसा, इर्न दिल्ली। , ISBN-978-81-89469-76-4
19. योग वसिष्ठ, गीता प्रैस, गोरखपुर। कोड नं- 574
20. स्वामी भास्केरश्वरानन्द, विवेकानन्द संचयन, श्री रामकृष्ण आश्रम, नागपुर ।